84 Tears
SEVIN
Mohit sharma
Ravi shankar

84 Tears

(Anti-Sikh Pogroms & Bhopal Gas Tragedy, 1984)

Art - Ravi Shankar (Bagh)

Poetry, Script & Research - Mohit Sharma (Trendster)

दर्द...दुख, विपदा...अधिकतर लोगो को इन शब्दों के मायने तब पता चलते है जब ऐसा कुछ दुखद उनके साथ होता है. ऐसा गलत है या नहीं मुझे खुद नहीं पता पर ऐसे लोग जब खुद पे बन आने पर मानवाधिकार, संवेदनहीनता, शासन की लापरवाही की बात करते है तो बड़ा अजीब लगता है. साथ ही उन लोगो के लिए मन मे श्रद्धा आ जाती है जो अपने निजी जीवन के ऊपर दूसरो की ख़ुशी के लिए काम करते है या दूसरो के अधिकारों के लिए संघर्ष करते है. भोपाल गैस त्रासदी और सिख विरोधी दंगे, ये दो त्रासदियाँ काफी कम अंतराल मे वर्ष 1984 मे भारत मे हुई. इन घटनाओ पर मैंने लिखने की ठानी जिसकी एक वजह थी. एक बार मेरी कक्षा मे इन त्रासदियों के संदर्भ मे कुछ बात कही गयी थी और मुझे आश्चर्य हुआ की किसी को इस बारे मे कुछ ख़ास जानकारी नहीं थी. फिर मैंने अपने साथ के कुछ और लोगो से बात की तो भी यही फल निकला. लोगो ने कहा की "हाँ, कहीं सुना तो है इनका नाम...क्या फर्क पड़ता है?" बहुत फर्क पड़ता है! तब मैंने सोच लिया की अपनी तरफ से कुछ तो करूँगा की लोगो को इन घटनाओ के बारे मे जानकारी मिले और भारत के इस काले अध्याय से हम लोग सबक ले सके...साथ ही पीड़ित लोगो, परिवारों को इंसाफ मिले. इस प्रयास का कोई राजनेतिक मतलब नहीं है...मै ये मानता हूँ की जैसी भारत की दशा है और तत्कालीन थी किसी भी सत्ताधारी दल के शासन मे ऐसा हो सकता था. भारत की इतनी बड़ी जनता ने खुद को इतना पंगु कर रखा है की बड़ी अक्षम्य गलतियाँ करने के बाद भी लोग शान से खुले घूमते है और अनगिनत लोग न्याय की राह तकते रह जाते है. ये गलत है और हर बार कहीं हुई नाइंसाफी मे हमारी इस अपंग सोच से फर्क पड़ता है...बहुत ज्यादा फर्क पड़ता है!

इन घटनाओ पर अपनी कल्पना और शब्दों को लगाया है जिनका किसी जीवित या मृत व्यक्ति, वस्तु, विचारधारा से कोई संबंध नहीं है. इन बेजान शब्दों को कलारूप दिया है श्री रवि शंकर (रवि बागेश्वर) ने. शब्दों से कला मे आने मे कुछ बातें रह गयी और कुछ त्रुटियाँ हुई है जिनकी मै क्षमा मांगता हूँ. पर आशा है की आप तक मेरा संदेश, पीड़ित लोगो की भावनायें पहुंचे. एक ऐसा भारत बने जहाँ कभी ऐसा नहीं हो. इस किताब से होने वाली आय से हम ऐसे और भी कार्य आगे कर सकेंगे और उनका बड़े स्तर पर प्रचार-प्रसार कर पायेंगे.
- मोहित शर्मा

भोपाल गैस त्रासदी (Bhopal Gas Tragedy)

कोई इतना लापरवाह और संवेदनहीन कैसे हो सकती है? लगातार चेतावनियाँ मिलने के बाद भी कीटनाशक (फसलो को खाने वाले कीट जो उस वक़्त फसलो को भारी मात्र मे बर्बाद कर देते थे) सेविन (Sevin) बनाने वाली अमेरिकी कंपनी यूनियन कार्बाइड ने सुरक्षा के लिए सलाह के अनुसार न इंतज़ाम किये, न ही अलग से लोग रखे. अलबत्ता जानलेवा रसायनों को आस-पास के वातावरण मे फैलने से रोकने के इन्तेजामो मे पैसा व्यय करना कम कर दिया और फेक्ट्री मे लगे कर्मचारियों को भी कम कर दिया जिसकी वजह से ये बड़ी त्रासदी हुई. ऊपर से ऐसे रसायनों का इस्तेमाल करती कंपनी के पास भारी आबादी वाली गरीब बस्तियों को बसने देना....एक और बहुत बड़ी भूल.

उस दिन भोपाल शहर का हाल शायद सोचा भी नहीं जा सकता. हर तरफ हवा मे घुले ज़हर की अदृश्य जानलेवा मौत से भागते लोग, और भागने मे वो जितनी ज्यादा और लम्बी साँसे लेते उतना ही मौत के करीब आ जाते. मरीजों से भरे हुए भोपाल और आस-पास के क्षेत्रो के अस्पताल, और अस्पताल के बाहर लगे पंडाल जहाँ अनगिनत मरीजों से घिरे चंद असहाय डाक्टर और उनके सहायक या मेडिकल छात्र. गैस ये अंधे हुए लोग, खून की उलटी करते लोग...मरते हुए लोग और उनके आस-पास चीखते-बिलखते उनके अपने. भरी हुई सामूहिक कब्रे, सडको पर बेजान मवेशी, परिंदे...और इंसान. जाने कितनी ही मृत माँ और उनकी गोद मे नवजात बच्चे. तब भारत मे शादियों की बहार रहती है, खुश, जश्न मानते लोग कुछ पलो मे ही मृत हो गये.

फ़ोन पर चिल्लाते, रोते हुए डाक्टर्स को यूनियन कार्बाइड ने कभी इन रसायनों के घटकों की जानकारी नहीं दी क्योकि शायद ये थे ही इतने ज़हरीले की ये किसी भी सरकारी मानक पर खरे न उतरते...पर भारत मे तो हर चीज़ का और हर काम करवाने का जुगाड़ होता है न? (जिसका कई लोगो को नाज़ है). इसके घटक न पता चल पाने की वजह से जो कई बार पूछने पर भी अमेरिका मे बैठे यूनियन कार्बाइड के अधिकारीयों ने नहीं बताये, मरते या

पीड़ित लोगो को बचने के लिए कोई दवाई नहीं बन पायी. हाँ, मरते हुए लोगो को ये सलाह ज़रूर दी गयी की ज्यादा से ज्यादा पानी पियें ताकि रसायन की मात्र कम हो शरीर मे और मुहं पर गीला कपडा बांध कर रखे. शर्म आती है..कोई ऐसा कैसे कर सकता है? पर 'ऐसा' तो अक्सर होता है. लोगो का मरना संख्या बन जाता है. अब सजा या मुआवज़े की बात करना ही बेमानी लगता है और मन मे गहरी टीस छोड़ जाती है. सबसे ये निवेदन है की अगर आप ऐसी स्थिति या पद पर है जहाँ आप कुछ कर सकते है तो ज़रूर कीजिये.

जब भोपाल गैस काण्ड के दोषियों की बात होती है तो ऐसा लगता है हर चीज़ उन्होंने खरीद ली है...शायद ये शहर भी! ये ग़ज़ल भोपाल गैस त्रासदी पर लिखी है.

ये उनका शहर है!

कातिल आँधियों मे किसका ये असर है?
दिखता क्यों नहीं है हवा मे जो ज़हर है?
चीखें सूखती सी कहाँ मेरा बशर है?
ये उनका शहर है....

धुँधला आसमां क्यों शाम-ओ-सहर है?
आदमखोर जैसा लगता क्यों सफ़र है?
ढलता क्यों नहीं है ये कैसा पहर है?
ये उनका शहर है....

जानें लीलती है ख़ूनी जो नहर है.
माझी क्यों ना समझे कश्ती पर लहर है?
हुआ एक जैसा सबका क्यों हषर है?
ये उनका शहर है...

रोके क्यों ना रुकता...हर दम ये कहर है?
है सबके जो ऊपर..कहाँ उसकी मेहर है?

जानी तेरी रहमत किस्मत जो सिफर है!
ये उनका शहर है....

इंसानों को तोले दौलत का ग़दर है!
नज़र जाए जहाँ तक मौत का मंज़र है!
उजड़ी बस्तियों मे मेरा घर किधर है?
ये उनका शहर है...

The **Bhopal gas tragedy**, a gas leak incident in India, considered one of the world's worst industrial catastrophes. It occurred on the night of December 2–3, 1984 at the Union Carbide India Limited (UCIL) pesticide plant in Bhopal, Madhya Pradesh, India. A leak of methyl isocyanate gas and other chemicals from the plant resulted in the exposure of hundreds of thousands of people. Estimates vary on the death toll. The official immediate death toll was 2,259 and the government of Madhya Pradesh has confirmed a total of 3,787 deaths related to the gas release. Others estimate 3,000 died within weeks and another 8,000 have since died from gas-related diseases. A government affidavit in 2006 stated the leak caused 558,125 injuries including 38,478 temporary partial and approximately 3,900 severely and permanently disabling injuries. As many as 25,000 deaths have been attributed to the disaster in recent estimates.

UCIL was the Indian subsidiary of Union Carbide Corporation (UCC), with Indian Government controlled banks and the Indian public holding a 49.1 percent stake. In 1994, the Supreme Court of India allowed UCC to sell its 50.9 percent share. Union Carbide sold UCIL, the Bhopal plant operator, to Eveready Industries India Limited in 1994. The Bhopal plant was later sold to McLeod Russel (India) Ltd. Dow Chemical Company purchased UCC in 2001.

Civil and criminal cases are pending in the United States District Court, Manhattan and the District Court of Bhopal, India, involving UCC, UCIL employees, and Warren Anderson, UCC CEO at the time of the disaster. In June 2010, seven ex-employees, including the former UCIL chairman, were convicted in Bhopal of causing death by negligence and sentenced to two years imprisonment and a fine of

about $2,000 each, the maximum punishment allowed by law. An eighth former employee was also convicted, but died before judgment was passed.

Even 27 years later the lakes around contain the toxic gas and people still drink it. Partial blindness, paralysis, impaired immune systems all struck lacs of people in just a few years. People waiting for justice. Permanent injuries getting Rupees 1500, this is not a joke. Mr. Warren Anderson visited India after the tragedy fle & so far is absconding.

कातिल आँधियों में किसका ये असर है?
दिखता क्यों नहीं है हवा में जो जहर है?
चीखें सूखती सी कहाँ मेरा बशर है?
ये उनका शहर है....
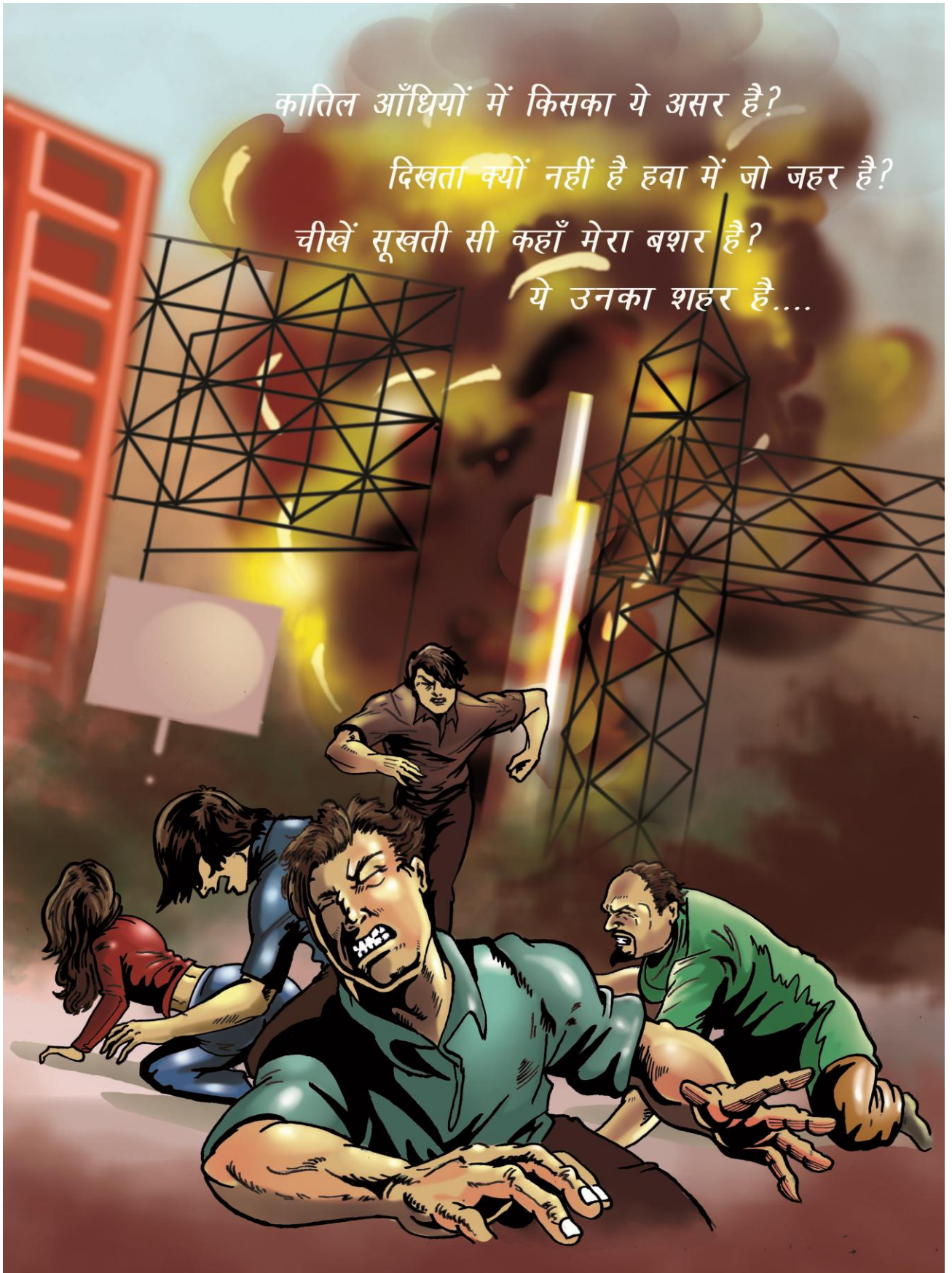
धुँधला आँसमा क्यों शाम-ओ-सहर है?
आदमखोर जैसा लगता क्यों सफर है?
ढलता क्यों नहीं है ये कैसा पहर है?
ये उनका शहर है....
VODAFONE
प्रतीक्षालय
महिला
(Waiting Room)
बुक स्टाल
टी स्टाल
प्रसाधन
प्रतीक्षालय पुरुष Waiting Room
द्वितीय वातानुकूलित कुर्सीयान
SECOND A.C.CHAIR CA
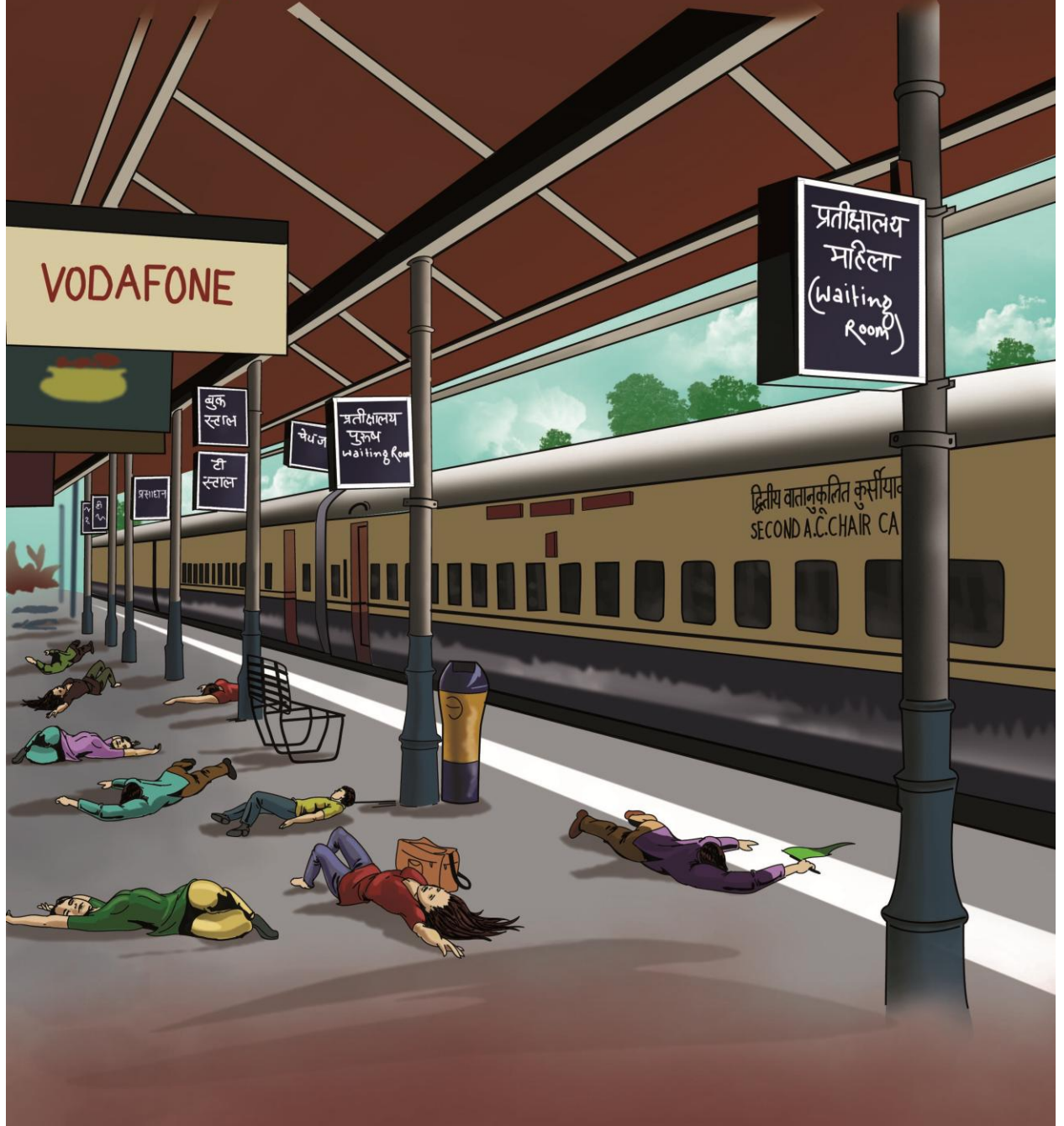
जाने ले लेती हैं खूनी जो नहर हैं...
माझी क्यों ना समझे कश्ती पर लहर है?
हुआ एक जैसा सबका क्यों हश्र है?
ये उनका शहर है....
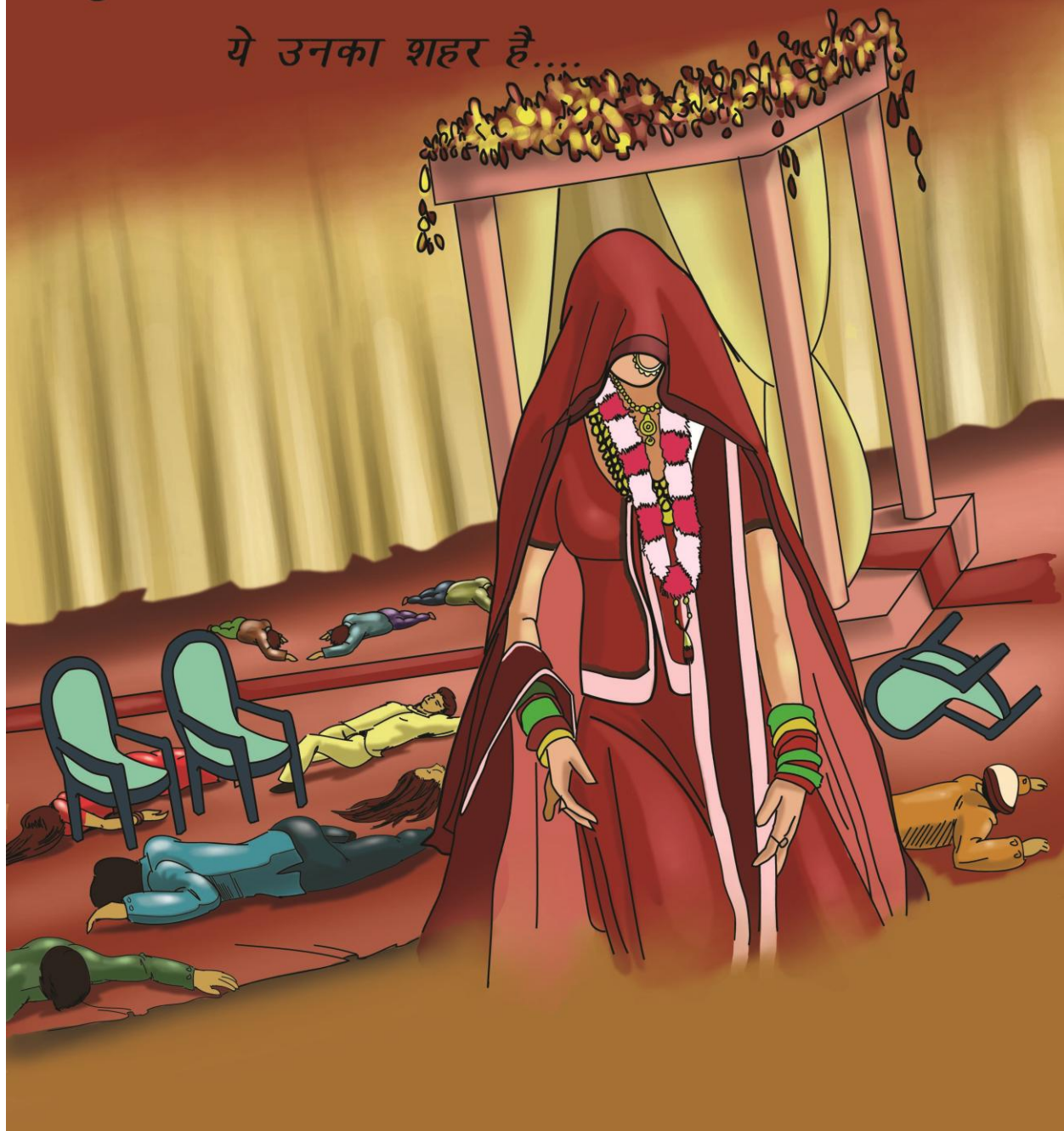
रोके क्यों ना रुकता... हरदम ये कहर है?
है सबके जो ऊपर...कहाँ उसकी मेहर है?
जानी तेरी रहमत किस्मत जो सिफर है!
ये उनका शहर है...

इंसानों को तोले दौलत का गदर है!
नजर जाए जहाँ तक मौत का मंजर है!
उजड़ी बस्तियों मे मेरा घर किधर है?
ये उनका शहर है.....

सिख विरोधी दंगे (Anti-Sikh Pogroms, October 31-November 3, 1984)

न जाने कितनी बार हम लोग कुछ लोगो के मतलब का न सिर्फ शिकार होते है बल्कि अनजाने मे उनके मोहरे बन जाते है. भारत का इतिहास ऐसे उदाहरणो की कमी नहीं है. हम अपनी विविधता पर नाज़ करते है की हम विभिन्न जगहों, प्रांतो, धर्मो के लोग, सैंकडो भाषाऒं-बोलियों को बोलने वाले साथ रहते है. पर इस साथ रहने के कुछ कमज़ोर पहलुओं का मुट्ठी भर लोग अक्सर मजाक उड़ाते हुए हम लोगो से हमारे ही देशवासियों को लड़वाते है. बड़ी बातों के नाम पर अनगिनत 'छोटे' लोग गलत कर बैठते है.

श्रीमती इंदिरा गाँधी जी की मृत्यु के बाद शुरू हुए सिख विरोधी दंगे हमारी इसी सदियों पुरानी कमजोरी की एक और दुखद कड़ी है. इसकी नीव रखी भाषायी राजनीती ने जो हमारी स्वतंत्रता के समय रखी गयी. मतभेद सुलझाने की कभी कोशिश नहीं किये गयी और दशको से ज़मीन के नीचे दबे और बढ़ रहे मतभेद सतह पर आ गए. खुद को बुद्धिजीवी और प्रोढ़ मानने वाले बड़ो ने बच्चो जैसे निर्णय लिए और जिनका एक अंजाम ये निकला. भारत मे ऐसे मतभेदों की कमी नहीं है जिनका एक और उदाहरण हम पूर्वोतर राज्यों मे देख सकते है. बाद मे ऑपरेशन ब्लेक थंडर और ऑपरेशन वूड रोज़ हुए.

पहले से ही संवेदनशील मुद्दों को हम लोग औप्चरिक्तओ मे उलझा कर और जटिल कर देते है. पीड़ित लोगो की पीड़ा को अगर कम न कर सके पर बढ़ाये तो नहीं. कुछ लोगो को एक मौत का बदला लेना था जो उन्होंने हजारो को मारकर और लाखो को घायल, बेघर करके लिया. विडंबना तो ये है की इस विविध देश मे हम सब मिलकर रहते है....तो सिख घरो को बकायदा राशन कार्डो और वोटरलिस्ट से ढूँढा गया और अनपढ़ भीड़ को उन घरो को जलाने और उनमे रहने वालो को मरने मे कोई दिक्कत न हो तो उन घरो को चिन्हित भी किया गया. सार्वजानिक रेडियो पर उग्र भाषण और "खून का बदला खून" जैसे नारे दिए गये. इस नरसंहार और देश को बांटने वाली क्रिया के बाद जब बड़ो की नींद टूटी तब समितियां बिठाने की औप्चरिक्ता और साक्ष्य मिटाने की कोशिशें शुरू हो गयी. करोडो लोगो से बने समुदाय या उनकी विचारधाराएं कभी गलत नहीं होती...गलत होते है बड़े पदों पर आसीन कुछ लोग

और उनके पीछे भागते अनगिनत लोग. कहा तो जाता है की ऐसी घटनाएँ भारत मे अब नहीं होती पर बाबरी, गोधरा, और उनके बाद हुई घटनाये तो कुछ और ही कहानी कहती है.

उठो! लड़ो! देश के लिए लड़ो....देश से मत लड़ो.

यह कविता समर्पित है उन सभी मासूम को और आधारित है आँखों देखे वर्णन और दृश्यों पर!

उस बेरहम वक़्त को झेलती एक जवान सिख लड़की की कहानी......

....84 की टीस (Pogrom 84)

वीरे पग ना पहनियो,
के किस्मत फिर जायेगी.
बरसो टली क़यामत,
आज बस यूँ आयेगी....

आँखों देखा मंज़र क्यों ये दिल ना माने?
खालिस्तानी बोली भिंदरवाले जाने.
आँगन लाल है मेरा, रो-रो लाल है आँखें.

सुबह जिनके पैरो पर अपने हाथ लगाये,
शाम को चिथड़ो मे से हाथ बस पैर वो आये.

अपनी फसले जलाई,
दीवारे घर की ढहाई.
फिर भी मिली ना ठंडक...

तो पग विच आग लगाई.

सीने पर जो वज़न लदा ऐसे,
सांस लूँ अब बता मै कैसे?
देखे कोई मुझे आसमां से,
खोल रखा है घर के दरो को,
आओ-आओ मुझे मार डालो.

गूँजते नारों ने बताया,
जिसमे मैंने होश संभाला,
हर सावन का झूला डाला,
मेरा देश है वो पराया!

रंगीन टी.वी. जो तू प्यार से लाया,
लाल सड़क पर उसमे तुझे मरता दिखाया.
ढकने सावन को पतझड़ आया,
अब लंगर नहीं लगाता गली का गुरुद्वारा.

भारी और नम हवा कुछ बताये....
खून की गंध अपनों की लाये.
कहते किसको क़यामत पता क्या?
लुट गया मेरा जो भी जहाँ था.

दौड़ी बी जी मेरी चौक तक यूँ,
कितनी चीखें सुनी क्या बताऊँ?
हार कर कानो पर हाथ आये,
तब भी ज़ेहन से चीखें ना जाये.

राशन-वोटर कार्ड कभी अपने काम ना आये,

सरकारी दफ्तरों से उनकी लिस्ट वो लाये.
सुर्ख निशान घरो पे हमारे बनाये,
सोचती हूँ कहाँ है उसका कलेजा?
लाशों से जो वो लिस्ट मिलाये.

जीते जी मैंने इज़्ज़त बचा ली,
खुद ही अपनी नस काट डाली.
बेरहम मौत तब भी ना आये,
दर्द अब तो सहा ना जाये.

घर मे रहकर याद घरवालो की सताये,
पहुंची हूँ मै घिसट कर छत तक....और कुदूँगी...
....क्यों?
...क्योकि...ऊपर देख! मेरे बी जी-वीरा मुझे बुलाये!

The **1984 Anti-Sikh pogroms / riots** or the **1984 Sikh Massacre** were four days of violence in northern India, particularly Delhi, during which armed mobs killed Sikhs, looted and set fire to Sikh homes, businesses and schools, and attacked gurdwaras, in response to the assassination of then Prime Minister, Indira Gandhi by her Sikh bodyguards.

In the 1970s, during the Indian Emergency, thousands of Sikhs campaigning for autonomous government were imprisoned. The sporadic violence continued as a result of an armed Sikh separatist group which was designated as a terrorist entity by the government of India. In June 1984, during Operation Blue Star, Indira Gandhi ordered the Indian Army to secure the Golden Temple and eliminate any insurgents, as it had been occupied by Sikh Separatists who were stockpiling weapons. Later operations by Indian paramilitary forces were initiated to clear the separatists from the countryside of Punjab. Even today many Sikhs perceived the actions as an assault on their religion and rights, while the issue is contentious with abusive crimes committed by both sides.

The violence in Delhi was triggered by the assassination of Indira Gandhi on 31 October 1984, by two of her Sikh bodyguards in response to her actions authorising the military operation. The Government of India reported 2,700 deaths in the ensuing chaos. In the aftermath of the pogrom, the Government of India reported 20,000 had fled the city, however the PUCL reported "at least" 50,000 displaced persons. The most affected regions were neighborhoods in Delhi. Human rights organizations and the newspapers believe the massacre was organized. The collusion of political officials in the massacres and the failure to prosecute any killers alienated normal Sikhs and increased support for the Khalistan movement. The Akal Takht, the governing religious body of Sikhism, considers the killings to be a genocide.

After the assassination of Indira Gandhi on 31 October 1984, by two of her Sikh bodyguards, riots erupted on 1 November 1984, and continued in some areas for days, killing some 800 Sikhs. Sultanpuri, Mangolpuri, Trilokpuri, and other Trans-Yamuna areas of Delhi were the worst affected. Mobs carried iron rods, knives, clubs, and combustible material, including kerosene. The mobs swarmed into Sikh neighborhoods, arbitrarily killing any Sikh men or women they could find. Their shops and houses were ransacked and burned. In other incidents, armed mobs stopped buses and trains, in and around Delhi, pulling out Sikh passengers to be lynched or doused with kerosene and burnt.

वीरे पग ना पहनियो,
के किस्मत फिर जायेगी.
बरसों टली कयामत,
आज बस यूँ आयेगी....
आँखों देखा मंजर क्यों ये दिल ना माने?
खालिस्तानी बोली भिंदरवाले जाने.
आँगन लाल है मेरा, रो-रो लाल हैं आँखें..

सुबह जिनके पैरों पर अपने हाथ लगाये,
शाम को चिथड़ों में से हाथ बस पैर वो आये..

अपनी फसलें जलाई,
दीवारें घर की ढहाई.
फिर भी मिली ना ठंडक,
तो पग विच आग लगाई..

सीने पर जो वजन लदा ऐसे,
सांस लूँ अब बता मैं कैसे?
देखे कोई मुझे आसमां से,
खोल रहा है घर के दरों को,
आओ-आओ मुझे मार डालो..
गूंजते नारों ने बताया,
जिसमें मैंने होश संभाला,
हर सावन को झूला डाला,
मेरा देश है वो पराया..
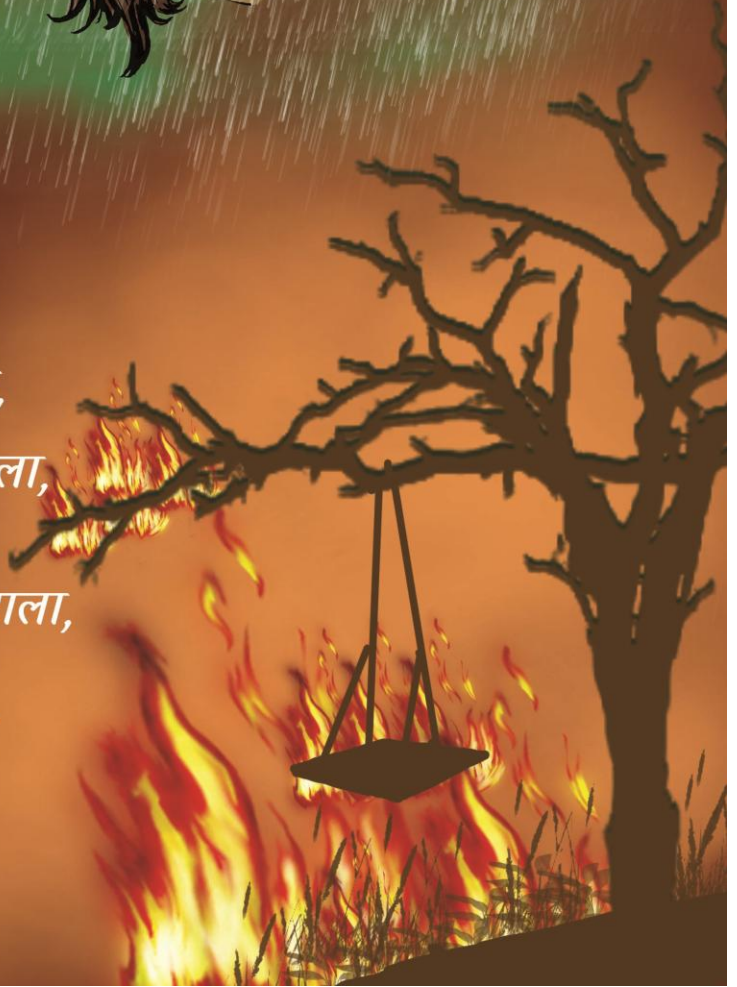
रंगीन टी.वी. जो तू प्यार से लाया,

लाल सड़क पर उसमें तुझे मरता दिखाया.

ढकने सावन को पतझड़ आया,

अब लंगर नहीं लगाता गली का गुरुद्वारा..

राशन-वोटर कार्ड कभी अपने काम ना आए,
सरकारी दफ्तरों से उनकी लिस्ट वो लाए.
सुर्ख निशान घरों पर हमारे बनाये,
सोचती हूँ कहाँ है उसका कलेजा?
लाशों से वो लिस्ट मिलाए.....

भारी और नम हवा कुछ बताए....
खून की गंध अपनो की लाए.
कहते किसको कयामत पता क्या?
लुट गया मेरा जो भी जहाँ था.
दौड़ी बी जी मेरी चौक तक यूँ,
कितनी चीखें सुनी क्या बताऊँ ?
हार कर कानों पर हाथ आये,
तब भी जेहन से चीखें ना जाये.

जीते जी मैंने इज्जत बचा ली,
खुद ही अपनी नस काट डाली.
बेरहम मौत तब भी ना आये,
दर्द अब तो सहा ना जाये..

घर में रहकर याद घरवालों को सताए,
पहुंची हूँ घिसट कर छत तक....और कुदूँगी...
....क्यों?
...क्योंकि...उपर देख! मेरे बी जी-बीरा मुझे बुलाये!
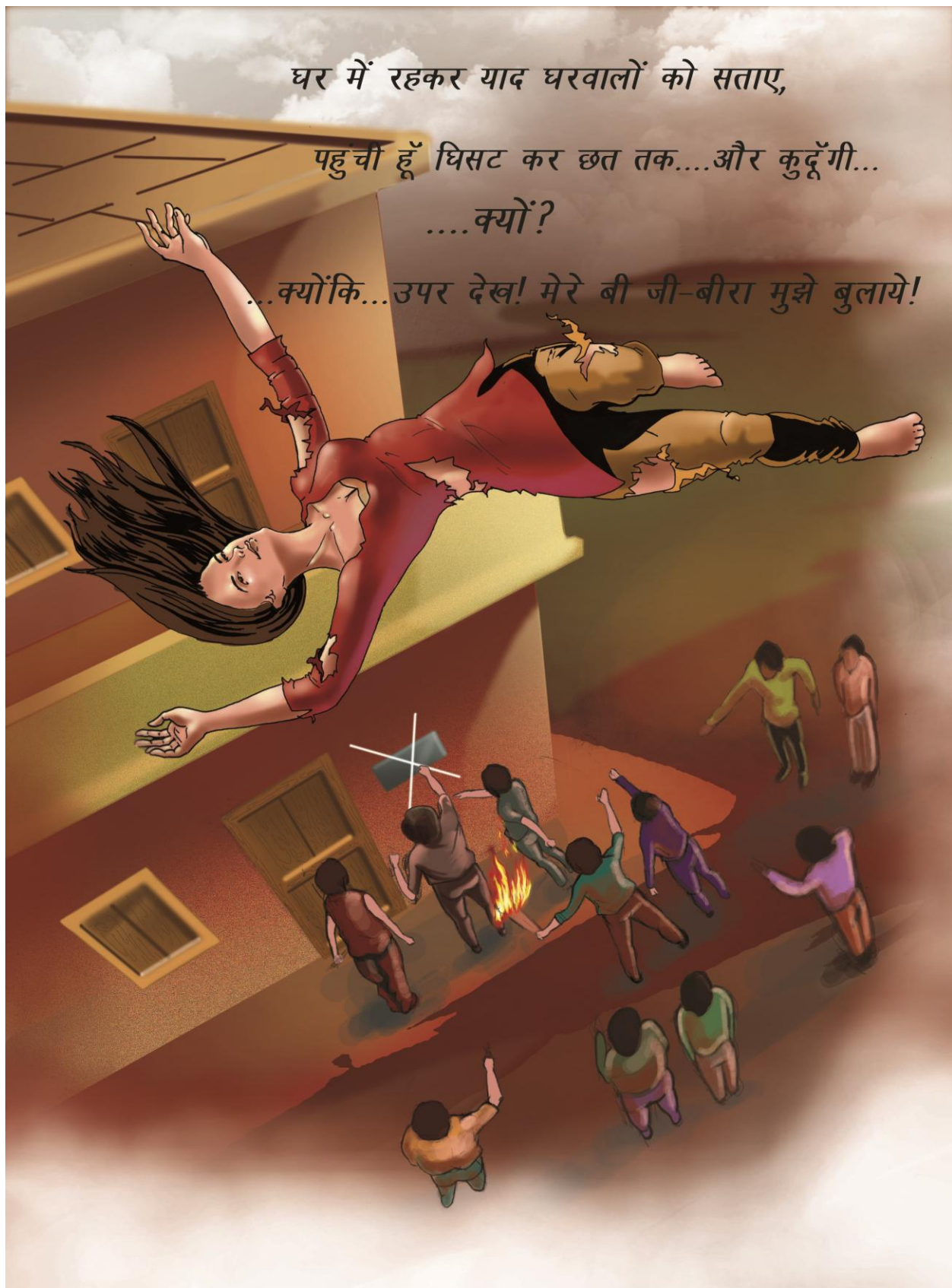
<u>Mohit Sharma's (Trendster) Creative Works</u>

Facebook –
www.facebook.com/Mohitness

Twitter –
www.twitter.com/Trendzter

Blog –
www.mohitness.blogspot.com/

Online Creative Database –

About.me:
www.about.me/trendster

Yasni:
www.person.yasni.com/mohit+sharma+1193615

Email – letsmohit@gmail.com

Search Engine Terms – **"Mohit Trendster"** & **"Mohit Sharma Trendster"**

Ravi Shankar (Bagh) –

Email - ravishankar505@gmail.com